आदिवासी साहित्य में 'स्त्री प्रश्न'- एक अध्ययन

शीला भास्कर*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501839

ABSTRACT

आदिवासी साहित्य भारतीय साहित्य की एक विशिष्ट और सशक्त धारा है, जो आदिवासी समुदायों के जीवन, संघर्ष, संस्कृति और अस्तित्व को अभिव्यक्त करता है। इस साहित्य में 'स्त्री प्रश्न' एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया है। स्त्री प्रश्न का तात्पर्य केवल महिलाओं की स्थिति से नहीं है बल्कि उनके अधिकारों, अस्मिता, श्रम, शोषण, संघर्ष और सशक्तिकरण से भी है।

आदिवासी समाज को अक्सर मुख्यधारा समाज की तुलना में अधिक समानतावादी माना जाता है लेकिन वास्तविकता इससे अधिक जटिल है। आदिवासी स्त्रियाँ एक ओर अपेक्षाकृत स्वतंत्रता का अनुभव करती हैं वही दूसरी ओर वे कई प्रकार के सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण का सामना भी करती हैं। आदिवासी साहित्य इन विरोधाभासों को गहराई से उजागर करता है।

KEYWORDS: आदिवासी, स्त्री, संघर्ष, शोषण, विस्थापन.

* **डॉ. शीला भास्कर**, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एस.एस.एन.सी. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर कॉलेज, हुब्बल्ली.

आदिवासी समाज में स्त्रियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है वे परिवार और समाज की आधारशिला मानी जाती हैं। वे कृषि, वन संग्रह और पशुपालन में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में उनकी भागीदारी होती है। कई जनजातीय समुदायों में स्त्रियों को विवाह और जीवन के निर्णयों में स्वतंत्रता मिलती है। इसके बावजूद, कुछ क्षेत्रों में पितृसत्तात्मक प्रवृत्तियाँ भी मौजूद हैं, जो स्त्रियों की स्वतंत्रता को सीमित करती हैं।

श्रम और आर्थिक शोषण : आदिवासी स्त्रियाँ अत्यधिक श्रम करती हैं, लेकिन उनके श्रम को उचित मान्यता नहीं मिलती, वे खेतों में काम करने के साथ-साथ घर के कार्य को भी निभाती हैं। साहित्य में यह प्रश्न बार-बार उठाया गया है कि स्त्री के श्रम को क्यों अदृश्य माना जाता है। यह अदृश्य श्रम उनके शोषण का एक प्रमुख कारण है।

अस्मिता और पहचान का संकट : आदिवासी स्त्री के सामने एक बड़ा प्रश्न उसकी पहचान का है। वह न केवल एक स्त्री है, बल्कि एक आदिवासी भी है।

- मुख्यधारा समाज उसे 'पिछड़ा' मानता है।
- उसकी संस्कृति और परंपराओं को कमतर आँका जाता है।

आदिवासी स्त्री जीवन के संघर्ष को लेकर रमणिका गुप्ता, महाश्वेता देवी, निर्मला पुतुल, डॉ मंत ज्योत्स्ना, वन्दना टेटे, रोज केरकेट्टा आदि साहित्यकारों ने अपनी कविताओं और साहित्य के माध्यम से अपना भोगा हुआ यथार्थ और साथ ही अपने समाज के सामाजिक वैयक्तिक जीवन संघर्ष अस्तित्व की समस्या और शिक्षा जैसी समस्याओं को व्यक्त किया है।

निर्मला पुतुल ने 'हमें चाहिए बेखौफ आजादी' कृति में लिखा है -

"तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठ खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास..?
अगर नहीं
तो जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से पर
एक स्त्री के बारे में ...?"

साहित्य में यह संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ स्त्री अपनी पहचान को बचाने के लिए संघर्ष करती है।

विस्थापन और विकास का प्रभाव : आधुनिक विकास परियोजनाओं जैसे बाँध, खनन उद्योगों के कारण आदिवासी समुदायों का बड़े पैमाने पर

विस्थापन हुआ है। वे यह समस्या पूर्वजों से झेलते आ रहे हैं। कितनी बार उनका प्रतिकार भी किया जिनमें से कुछ भारतीय इतिहास में संताल विद्रोह और मुंडा विद्रोह के रूप में दर्ज है। किंतु ऐसे असंख्य किताबों की पहुँच से बाहर है। आधुनिक काल में तथाकथित मुख्यधारा के लोगों ने उनका तिरस्कार किया, उनको बंदरों सा नचाया, उनकी नंगी तस्वीर खींची, उनको उन्हीं के जमीन से बेदखल किया गया। समाज का अत्याचार, विदेशी कंपनियों, पुलिस नक्सलवाद ने उन्हें घने जंगल में जाने को मजबूर किया। वंदना टेटे लिखती हैं -"विस्थापन, पलायन और औद्योगिकरण का सबसे ज्यादा भार आदिवासी महिलाओं को ही भोगना पड़ा है। इन जगहों पर चाहे वह आदिवासी समाज की महिला हो या गैर आदिवासी समाज की, दिहाड़ी मजदूर 'रेजा' हो या फिर किसी सरकारी अथवा गैर सरकारी विभाग में कार्यरत मध्यवर्गीय महिला, दोनों ही समान रूप से उत्पीड़ित है।"

इसका सबसे अधिक प्रभाव स्त्रियों पर पड़ा है। आजीविका के साधनों का नुकसान, सामाजिक सुरक्षा का अभाव, सांस्कृतिक विघटन। आदिवासी साहित्य में विस्थापन को एक गहरी त्रासदी के रूप में चित्रित किया गया है।

यौन शोषण और हिंसा : आदिवासी स्त्रियाँ बाहरी शक्तियों - जैसे ठेकेदारों, पुलिस और उद्योगपति द्वारा शोषण का शिकार होती हैं।

साहित्य में इन घटनाओं को न केवल दर्शाया गया है, बल्कि उनके खिलाफ आवाज भी उठाई गई है। यह 'स्त्री प्रश्न' का एक संवेदनशील और गंभीर पक्ष है।

शिक्षा और जागरूकता का अभाव - शिक्षा की कमी आदिवासी स्त्रियों के विकास में एक बड़ी बाधा है। शिक्षा के अभाव में वे अपने अधिकारों से अनभिज्ञ रहती हैं। सामाजिक और आर्थिक प्रगति में पीछे रह जाती हैं। साहित्य में शिक्षा को सशक्तिकरण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आदिवासी साहित्य में स्त्री का प्रतिरोध और संघर्ष : आदिवासी साहित्य केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि स्त्री के प्रतिरोध और संघर्ष को भी दर्शाता है।

- स्त्रियाँ अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं।
- वे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हैं।
- सामूहिक आन्दोलन में भाग लेती हैं।

इस प्रकार आदिवासी स्त्री केवल पीड़ित नहीं बल्कि एक सशक्त और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में उभरती है।

आदिवासी महिला लेखिकाओं का योगदान : आदिवासी महिला लेखिकाओं ने 'स्त्री प्रश्न' को अपनी रचनाओं के केन्द्र में रखा है। उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर समाज की वास्तविकताओं को उजागर किया है। उनकी रचनाओं में स्त्री की पीड़ा, उसका संघर्ष, उनका आत्मसम्मान, स्पष्ट रूप से

दिखाई देता है।

स्त्री और प्रकृति का संबंध : आदिवासी साहित्य में स्त्री और प्रकृति का संबंध अत्यंत गहरा है।

- स्त्री को धरती, नदी और जल से जोड़ा जाता है।
- वह प्रकृति की संरक्षक मानी जाती है।

जब विकास के नाम पर जंगलों को नष्ट किया जाता है तो इसका सीधा प्रभाव स्त्रियों के जीवन पर पड़ता है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में स्त्री प्रश्न

समकालीन आदिवासी साहित्य में स्त्री प्रश्न और अधिक जटिल हो गया है।

- वैश्वीकरण का प्रभाव
- सांस्कृतिक बदलाव
- शहरीकरण

इन सभी ने स्त्री के जीवन को प्रभावित किया है, अब स्त्री केवल पारंपरिक समस्याओं से नहीं, बल्कि आधुनिक चुनौतियों से भी जूझ रही है।

समाधान और संभावनाएँ :

- शिक्षा का प्रसार - शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों को जागरूक और सशक्त बनाया जा सकता है।
- आर्थिक सशक्तिकरण - स्वरोजगार और सरकारी योजनाओं के माध्यम से स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।
- सामाजिक जागरूकता - समाज में स्त्री के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है।
- साहित्य की भूमिका - साहित्य समाज को जागरूक करने और बदलाव लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

निष्कर्ष : आदिवासी साहित्य में 'स्त्री प्रश्न' एक बहुआयामी और जटिल विषय है। यह केवल स्त्री की समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि उसके संघर्ष प्रतिरोध और सशक्तिकरण को भी उजागर करता है।

आदिवासी स्त्री एक ओर परंपराओं की संरक्षक है वही दूसरी ओर वह आधुनिकता के साथ संघर्ष कर रही है। साहित्य के माध्यम से उसकी आवाज को व्यापक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है।

अतः यह आवश्यक है कि आदिवासी स्त्री के प्रश्नों को गंभीरता से समझा जाए और उनके समाधान के लिए ठोस प्रयास किया जाए।

संदर्भ :

1. एक्का जे. (२०१७): आदिवासी साहित्य में लैंगिक पहचान का प्रश्न। इंडियन लिटरेचर रिव्यू ३९ (३), पृ. ७८-९२
2. कुजूर आर (२०२०): आदिवासी स्त्री विमर्श - समस्या और समाधान। जनजातीय अध्ययन पत्रिका १२ (१)
3. सं कविता कृष्णन, जुलियन विगो, रणेंद्र सविता सिंह : हमें चाहिए बेखौफ आजादी। प्रकाशक - सांस्कृतिक संकुल जन संस्कृति मंच, बैक कवर पेज।
4. टेटे वंदना : आदिवासी साहित्य परम्परा और प्रयोजन, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, रांची झारखण्ड, संस्करण २०१३, पृ. ७५